IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति का समाज पर प्रभाव

Dr. Jyoti Baya

सांराश :– आधुनिकता क फलस्वरूप नये–नये अविष्कार हो रहे। जिसके चलते ऐसी वस्तुओं का भी विकास हो रहा है जा नशे से संबंधित हैं और यही युवाओं को न"ों में दकल रही है। यह आधुनिक समाज में एक गंभीर समस्याओं में से एक है। युवाओं में नशे की प्रवृत्ति केवल व्यक्तियों के स्वास्थ को प्रभावित नहीं करती अपितु यह समाज व परिवार को भी प्रभावित करती है। अक्सर यह देखा जाता है कि युवाओं में पारिवारिक और सामाजिक तनावों के कारण नशे की प्रवृत्ति बढ़ती ह जिसके कारण अन्य समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। जैसेः– मानसिक संतुलन की कमी, स्वास्थ संबंधित समस्याएँ, हिंसा जैसी प्रवृत्ति, आर्थिक हानि के साथ–साथ सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी देखी जा सकती है। युवाओं में बढ़ते न"ा की आदत परिवार के सदस्यों के साथ आपसी मनमोटाव उत्पन्न करती है। क्योकि युवा अपने पारिवारिक दायित्व को भूल कर नशे मे विलुप्त होते जाते है जिसके चलते परिवार में कलह अशांति जैसी स्थिति बनी होती है और साथ ही साथ इसका प्रभाव पूरे समाज में देखने को भी मिलता है कि किस तरह समाज नशे की ओर बढ़ रहा है और उस प्रभावित कर रहा है।

शब्दकुंजो :– युवा, नशा, परिवार, समाज, अन्य।

प्रस्तावनाः– जहां आज युवाओं को समाज का भविष्य निर्माण के रूप में देखा जा रहा है वही यह भी सत्य है कि युवाएँ आज नशं के पीछे भाग रही है। जिसका मुख्य कारण समाज के द्वारा उन पर बढ़ता दबाव है। जब बालक स्कूली शिक्षा ग्रहण करता रहता है। तो उसके परिवार व समाज उससे कई सारी उम्मीदं लगा बैठता है जैसे–जैसे वे युवावस्था में आता है यही उम्मीदं दबाव लगने लगती है क्योंकि परिवार व समाज दोनों ही युवाओ से ऐसी अपेक्षाएँ लगा बैठती है जिसकों यदि युवा वर्ग न कर पाये तो वे इन पर अपना गुस्सा निकालते है। इससे युवाओं की मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ता है और वे सीधें गलत लत की ओर आगे बढ़ते हैं। यहों से नशे की प्रवृत्तियों की शरूआत होती है। इसके आलावा गलत साथियों व मित्रता के कारण भी युवा आज नशे से जुड़ रहे है क्योकि युवा वर्ग न"ों को मनोरंजन का साधन मानने लगे है। व अपनो मानसिक व

शारिरिक स्थिति को ठीक करने के लिए नशे का सहारा ले रहे हैं। जिससे पूरा समाज पर प्रभाव देखने को मिल रहा है।

युवाओं में न"ों की बढ़ती प्रवृत्ति का समाज पर प्रभाव :–

1. सामाजिक असमानता और भेदभाव :– नशे की लत व्यक्तिया का समाज में वर्चस्व कम कर देती है क्योकि समाज में अपनी भागीदारी नही दे पात जिससे समाज के द्वारा उन पर ध्यान नहो दिया जाता है धीरे–धीरे समाज से ये अलग होने लगते है तथा भेदभाव जैसी स्थिति निर्मित हो जाती है और वे समाज से अलग जीवन यापन करने लगत है जिससे असमानताएं उत्पन्न हाती है।

2. अपराध की बढ़ती प्रवृत्ति :– युवाओं को नशे करने से यदि नहीं रोका जाता है तो वे अपराध जैसी क्र्रितियों में संलिप्त हो जाते है क्योंकि नशे में सही गलत की समझ नहीं होती है जिससे कारण वे छड़छाड़, चोरी, मारपीट, गाली–गलोज जैसे अपराध कर बैठते है। जो कि समाज के लिए बुरा प्रभाव होता है।

3. सामाजिक विकास में कमी :– प्रारम्भ से ही युवा वर्ग अपने दायित्वों को छोड़कर न"ों में विलुप्त हो जाती है तो उसका दश्परिणाम परिवार के साथ–साथ समाज को भी भुगतना पड़ता है। युवा समाज को ऊपर उठाने वाला कल है जिससे वे उम्मीद रखते है। यही उम्मीदें समाज को नई दिशा प्रदान करतो है। लेकिन जब युवा सामाजिक विकास को छोड़कर अपने बुरे न"ों में विलुप्त हो जाते है तो समाज में होने वाले विकास में कमी देखी जा सकती है।

4. सामाजिक असुरक्षा :– युवाओं के नशे की प्रवृत्ति के चलते समाज असुरक्षित महसूस करने लगता है क्योकि उनके आस–पास का माहौल खराब हो जाता है जिसके कारण समाज में अशांति फैल जाती है और लोग आपस में लड़ाइ झगड़ा करने लग जात है। जिसका नुकसान समाज उठाता है।

5. शिक्षा पर नकरात्मक प्रभाव :– शिक्षा युवाओं को आग बढ़ान के लिए होता है ताकि वे पढ़ लिखकर कुछ बन पाये और समाज तथा परिवार का नाम रोशन हो लेकिन आज के युवा वर्ग न"ों पर निर्भर होती जा रहीं हैं। और शिक्षा पर नकरात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है क्योकि एक युवा यदि कुछ बनकर दिखाता है तो पूरा समाज प्रभावित होता है तथा अन्य युवाएं इससे प्रेरणा लेकर आग बढत है। वहीं दूसरी ओर यदि युवा वर्ग का कोई एक सदस्य नशा करता है तो अपने साथ अपने साथियों को भी इसमें शामिल कर लेता है और इससे युवाओं में नशें की प्रवृत्तियों में बढ़ोत्तरी देखी जा सकती है।

शोध पद्धति :–

प्रस्तूत शोध पत्र में युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति का समाज पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। जिसमें लक्ष्यों का सम्पूर्ण संकलन प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोंतों के द्वारा किया गया है। इसके अतिरिक्त अवलोकन व साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से भी अब अध्ययन किया गया हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :–

- युवाओं में नशें की बढतो प्रवृत्ति के बारे में अध्ययन।
- युवा में नशे की बढ़ती प्रवत्ति से समाज पर प्रभाव की अध्ययन।

विश्लेषण एवं सारणीयनः –

तालिका क्रमांक 1.4 में आयु के आधार पर तालिका

क्र.	आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
1	12–15	30	12
2	16–19	70	28
3	20–23	110	44
4	24–27	40	16
	योग	250	100

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1.4 से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं में 12 प्रतिशत युवा की आयु 12–15, 28 प्रतिशत 16–19 व 44 प्रतिशत 20–23 वर्ष तथा 16 प्रतिशत 24–27 वर्ष के युवा जो नशे में विलुप्त पाये गये है । इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि ज्यादातर युवा 20–23 वर्ष के है जिनमें नशे की प्रवृत्ति सर्वाधिक मात्रा में देखी गई है।

निष्कर्श :–

अध्ययन क्षेत्रों से मिली जानकारी के अनुसार यह निष्कर्ष निकलता है कि युवा सामाजिक व परिवारिक दबाव के कारण नशे की ओर बढ़ रहे है क्योकि उन पर इतना दबाव बनाया जाता है कि वे मानसिक रूप से पोडित हो जात है ऐसे में उन्हें नशा ही एक मात्र सहारा लगता है जिससे वे अपनी परेशानियों को ठीक कर सके इस कारण से युवा वर्ग न”ा का सेवन करने लगे है। आज कल न”ाा साथियों, रिश्तेदारां और सामाजिक कार्यक्रमों में सर्वाधिक देखने को मिल रहा है क्योंकि उन्हें यह शुरू से सिखाया जाता है। वे यह मानने लग जाते है कि यदि मनोरंजन करना हो तो नशें से बेहतर कोई और उपाय नहीं है। और यह एक से अधिक युवाओं में देखने के लिए मिल रहा है। कि किस तरह युवा अपनी सारी परेशानियों से छुटकारा पाने के लिए नशं का सेवन कर रहें है।